International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 13-10-2020; Accepted: 28-10-2020; Published: 16-11-2020
www.hindijournal.com
Volume 6; Issue 6; 2020; Page No. 31-34

नागार्जुन की संस्कृत एवं बंगला कविताओं में प्रकृति चित्रण

डॉ. राम बिहारी चौधरी

बेला दुल्लाह, रानीपुर रोड, दरभंगा, बिहार, भारत

सारांश :
जनकवि के रूप में लब्धप्रतिष्ठित कवि नागार्जुन ने आन्तर तथा बाह्य प्रकृति का बहुविध चित्रण किया है |प्राकृतिक सौंदर्य के वर्णन क्रम में कवि की संवेदनशीलता संप्रेषणीयता विवेच्य है |कवि ने प्रकृति के मानवीकरण के द्वारा प्रीतिनिष्ठा का प्रकाट्य कर भाव जगत में अलौकिकता की सृष्टि की है | कवि ने धरती की सोंधी गंध के प्रति अपनी आस्था प्रकट करते हुए,आकाश की इन्द्रधनुषी छटा का भी अवलोकन किया है इसप्रकार धरती-आकाश को संयुक्त कर, इन्होने मानवीय संवेदनाओं के उत्थान का भव्य वर्णन किया है | नागार्जुन की प्रकृतिपरक कविताएँउनकी आनुभूतिक सघनता को प्रकट करती है | कवि का कल्पना-विधान, सहज तथ्यों तथा भावों को उपस्थित कर, चमत्कार उत्पन्न करता है | इनकी प्रकृतिपरक रचनाओं में प्रवाहात्मकता,नाद-सौंदर्य तथा बिम्ब-विधान की सुन्दरता दृष्टिगत होती है |

कूट शब्द: संस्कृत एवं बंगला, नागार्जुन, बहुविध चित्रण

प्रस्तावना

जनवादी कवि के रूप में नागार्जुन ख्यातिलब्ध थे |इन्होंने आन्तर तथा बाह्य प्रकृति का बहुविध चित्रण किया है | प्राकृतिक सौंदर्य के वर्णन क्रम में कवि की संवेदनशीलता संप्रेषणीयता विवेच्य है | कवि ने प्रकृति के मानवीकरण के द्वारा प्रीतिनिष्ठा का प्रकाट्य कर भाव जगत में अलौकिकता की सृष्टि की है |कवि ने धरती की सोंधी गंध के प्रति अपनी आस्था प्रकट करते हुए, आकाश की इन्द्रधनुषी छटा का भी अवलोकन किया है इसप्रकार धरती-आकाश को संयुक्त कर, कवि ने मानवीय संवेदनाओं के उत्थान का भव्य वर्णन किया है|

यहाँ हम नागार्जुन की प्रकृति -विषयक संस्कृत एवं बंगला कविताओं की ओर दृष्टि डालते हैं तो पाते हैं कि संस्कृत में चार और बंगला में चार अर्थात् आठ कविताएँ प्रकृति की आभा से ओत -प्रोत हैं |संस्कृत की चारों कविताएँ यथा -'चश्माशाही', 'शीते वितस्ता', 'चिनार-स्मृतिः' और 'डल झील' काश्मीर प्रवासजन्य हैं |

चश्माशाही [1] छह पंक्तियों वाली एक छोटी कविता है | इसका शीर्षक मूल उर्दू चश्माशाही ही रह गया है| वास्तव में यह फारसी के दो शब्दों 'चश्मा' और 'शाही' से मिलकर बना समस्तपद है| चश्मा के फारसी में दो अर्थ हैं - पहला, पानी का सोता जलकुंड या प्राकृतिक जल-स्त्रोत तथा दूसरा, ऐनक | यहाँ पहला अर्थ ही अभिप्रेत है | दूसरा शब्द 'शाही' राजकीय, सरकारी या सल्तनत के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है | इस तरह चश्माशाही का अर्थ हुआ वह राष्ट्रीय या राजकीय जल-स्त्रोत जो प्राकृतिक रूप में उत्पन्न हुआ हो| कवि ने इसके लिए संस्कृत शब्दावली का प्रयोग न कर उसके मूल शब्द को ही ले लिया है |ऐसे कई प्रयोग पहले से ही संस्कृत में होते रहे हैं |

कविता का अर्थ है- चश्माशाही यानि अनवरत बहते स्वच्छ शीतल-जल के कारण निर्झारोद्यान -मंडप में ग्रीष्म प्रतिक्षण पंगुता को प्राप्त करता रहता है | दूसरे शब्दों में गर्मी का अनुभव नहीं होता | इतना ही नहीं

जलकुंड इतना साफ है कि उसमें नव-विवाहित दम्पती - वर और कन्या क्रमशः एक दूसरे के मुखमंडल और नेत्रों को देखते रहते हैं | इस तरह, चश्माशाही का निर्मल जल उन दोनों के लिए दर्पण का काम करता है –

"भुरीशः पश्यति वरो नवोढ़ाया मुखाम्बुजम
सत्विक्षते नीलह्रदे वल्लभस्य विलोचने ||" [2]

कवि ने मुख का सादृश्य विधान 'अम्बुजम' (कमल) के साथ ठीक ही किया है क्योंकि कमल पानी में ही खिलता है |

इस प्रकार की दूसरी कविता है - 'शीते वितस्ता' [3], जिसका शाब्दिक अर्थ है - जाड़े के समय झेलम नदी | शीतकाल में असहय ठंढक के कारण चारों दिशाओं में प्रसृत देवदारु के वृक्ष पीले पड़ गए हैं, जैसे उन्हें पीलिया रोग हो गया हो | इस कारण पूरी वनानी दीन-हीन अर्थात श्री हीन-सी लगती है | देखिये देन्यमाप्तावानानी | भूख-प्यास से शुष्क कंठ वाले झरनों के इस विषमतल गृह वाले कुल में अत्यधिक शैत्य (ठिठुरन) के फलस्वरूप वितस्ता (झेलम) जड़ीभूत गतिवाली नदी बनकर रह गयी है; क्योंकि सारा पानी बर्फ बन गया है |

"शैत्याधिक्य प्रभावाद बिजडित गति का स्विद्यतोयं वितस्ता" [4]

'चिनार स्मृतिः' 5 एक मध्यम आकार वाली कविता है |ज्ञातव्य है कि चिनार वृक्ष काश्मीर की सांस्कृतिक पहचान है |वसंत आते ही चिनार पीले और लाल रंगों की द्वाभा वाले स्वर्णाभ पत्तों से इसतरह लद जाता है कि रसलुब्ध भ्रमरों को भी उनमें स्वर्ण-कमल का भ्रम हो जाता है |इसी कविता के दूसरे छंद में कवि 'चिनार' से उसकी दीर्घायुता व स्वस्थ जीवन का रहस्य पूछते हैं |रात में अमृत का चषक-पान करनेवाला चिनार शतायु हो गया है |कवि की सहज जिज्ञासा होती है कि उसकी उम्र का कोई वृक्ष जीवित है भी या नहीं ?

"सत्यं ब्रूहि 'चिनार',जीवित न वा कश्चिद्व्यस्तव:|"[6]

इसी प्रकार की दूसरी मनोहारी कविता में प्रकृति का चित्रण देखिए-कविता का शीर्षक है -'डल झील'[7] | यह चार पंक्तियों वाली एक अत्यन्त छोटी कविता है | 'डल' व्यक्तिवाचक संज्ञा है, लेकिन झील जातिवाचक संज्ञा | इसके लिए संस्कृत में जलाशय, सरोवर आदि शब्द प्रयुक्त होने चाहिए |लेकिन नागार्जुन ने शुद्धता वाली दृष्टिकोण को न अपनाकर लोकानुगमन को प्रश्रय दिया |डल झील का मानवीकरण करते हुए 'नागार्जुन' ने स्वयं उसके मुँह से आत्मकथात्मक शैली में गर्वस्फित कथन कराया है |वह कहती है कि ग्रीष्मकाल में जब हवा के सहारे हल्की -हल्की तरंगें उठती हैं, तब रात के समय विद्युत् छठा में उभ-चुभ करते नौका-गृहों (बोट हौसेज)को तुम मेरे वक्ष पर दोलित अवस्था में देखते हो | यह देखकर तुम्हे जरुर अच्छा लगता होगा | क्या तुम जानते हो कि शीतकाल में जब इस झील का पानी बर्फ के रूप में जमकर स्वच्छ स्फटिक की तरह भासित होने लगता है तब मैं सुप्तावस्था को प्राप्त हिमाच्छादित पहाड़ी की तरह दिखने लगती हूँ | यही नहीं क्रीडा क्षेत्र (आइस फील्ड) समझकर यहाँ बच्चे,जवान सभी भांति-भांति की क्रीड़ाएँ करते हैं |देखिए मजमून-

"क्रीड़ाप्रांतरतां गतोऽस्मि शिशिरे किं त्वं विजानासितत | [8]"

क्या बढ़िया चित्र खींचा है कवि ने, लगता ही नहीं कि नागार्जुन मैथिली-हिंदी के कवि हैं| इसी प्रकार आप उनकी बंगला कविताओं में प्रकृति की अनुपम छटा को देख सकते हैं |वैसे बंगला भाषा से कवि का लगाव शुरू से रहा और हो भी क्यों नहीं | कवि दरभंगा के स्थाई निवासी हैं, जिसे बंगला में दारो बंगा अर्थात् बंगाल का द्वार कहते हैं |उनके बंगला भाषा-प्रेम के सम्बन्ध में कवि- पुत्र एवं नागार्जुन रचनावली के संपादक शोभाकांत बताते हैं –

"नागार्जुन जीवन-भर बंगला भाषा की क्लासिक और आधुनिक रचनाओं से निकटता बनाए रहे |निकट से जानने वाले जानते हैं कि उनके झोले में बनला पत्र-पत्रिकाओं के के साथ सद्यः प्रकाशित बंगला पुस्तकें भी रहती थी |"[9]

नागार्जुन के बंगला काव्य-संग्रह 'मैं मिलिट्री का बूढ़ा घोड़ा' में चार कविताएँ प्रकृति विषयक हैं | जिसमे प्रकृति के विभिन्न उपादानों का हृदयग्राही वर्णन है | इसमें 'पंत' की उड़ान भी है और कवि की आतंरिक ख़ुशी भी |

'आद्या छान्दसी' [10] शीर्षक कविता में कवि ब्रहम-बेला में टहलते-टहलते हुगली के तट पर बाग-बाजार के आस-पास खड़े प्रकृति को निहार रहे हैं | प्रकृति रानी हाथ में कलश लिए दिखाई पड़ी तो कवि के नयन प्रेम से स्निग्ध हो उठे | प्रकृति की यह झलक कवि की अज्ञानता को मिटा गई और पहलीबार कवि का मन पूर्ण उन्मुक्त हुआ | कविता का केंद्रीय भाव प्रकृति का नारी रूप में वर्णन है |

'तोमार झिलिक पेये ध्वस्त मम तम
पुरोपुरि उन्मुक्त एखन प्रथम बार '-कवि की स्वीकारोक्ति है |

वास्तव में जब मन प्रकृति से तादात्म होता है तो अन्यतम ख़ुशी मिलती है |इसी प्रकार की दूसरी कविता है- 'भूतुड़े तेतुलेर गाछ'[11] अर्थात् भुतहा पेड़ इमली का |यह एक छोटी परन्तु वर्णनात्मक कविता है |125-150 वर्ष पुराने इस पेड़ को कवि ने वनस्पतियों का परनाना और परदादा कहा है | लेकिन, वैशाखी तूफ़ान के प्रलयंकारी तांडव ने इसे धराशायी कर दिया | कवि ने धराशायी पेड़ को देखकर अफ़सोस व्यक्त करते हुए कहा-

'अहा, जीवनानते की ये
मर्मन्तुद परिदृश्ये हेये गेछे |'

अर्थात् आह! कैसा मर्मान्तक परिदृश्य है; जीवन का यह अंत | यहाँ कवि ने आम लोगों की धारणा को स्वर देते हुए इमली के पेड़ को भुतहा कहा है | यानी आम लोग कितने अन्धविश्वाशी होते हैं | आम लोगों में यह धारणा व्याप्त है कि पुराना पेड़ भुतहा होता है | उस पर भूत-प्रेत का साम्राज्य होता है | लेकिन, यह सत्य से कोशों दूर है |इस कविता के द्वारा कवि ने लोगों को पुराने पेड़ों को तिरोहित न कर पूर्वज की भांति पूजने का सन्देश दिया है |

'दारिये आछि' [12] अर्थात् खड़ा हूँ | कवि भागीरथी के इस पार राजनगर (पटना) में खड़ा होकर उसपार संबलपुर का सुविस्तृत दियारा के बीच भागीरथी के महाप्रवाह को देख रहे हैं | ऊपर आकाश श्रावण के मेघ से आच्छादित है | सुबह का समय है | अर्थात कवि चारों ओर से प्रकृति के उपादानों से घिरे हैं | बड़ा ही मनोरम दृश्य है |सावन मास की प्राकृतिक छठा इस कविता में पूर्ण परिपाक पर है|

इसी प्रकार की एक अन्य कविता है 'पातालक शिशिरेर द्विरागमन'[13] अर्थात भगोड़े शिशिर का पुनरागमन| भारत को ऋतुओं का देश कहा जाता है | यहाँ छह ऋतुएँ होती हैं | इस कविता में शिशिर को 'पातालक' अर्थात् भगोड़ा कहा गया है | शिशिर के आगमन की सूचना देते हुए कवि कहते हैं -

'मध्य फाल्गुनेर मेघला निशिये
एकटू परेइ हबे
पातालक शिशिर द्विरागमन '

अर्थात मध्य फागुन के मेघाच्छादित रात में बस होने ही वाला है भगोड़े शिशिर का पुनरागमन |

नागार्जुन की यह कविता सर्वेश्वर की 'मेघ आए' कविता की तरह ही है | कविता में आद्योपांत मानवीकरण अलंकार दृष्टिगत है |

निष्कर्ष

नागार्जुन की प्रकृतिपरक कविताएँ उनकी आनुभूतिक सघनता को प्रकट करती है | कवि का कल्पना-विधान सहज तथ्यों तथा भावों को को उपस्थित कर परम चमत्कार उत्पन्न करता है | नागार्जुन ने एक ओर चिनार का वर्णन कर पाठकों को काश्मीर प्रवास करने

को प्रेरित किया है तो 'भुतुरे तेतुरे गाछ' का वर्णन कर पुराने पेड़ों के संरक्षण एवं देखभाल को नितांत आवश्यक माना है | एक ओर शिशिर का मानवीकरण कर पाठकों की कंपकंपी की याद को तरोताजा कर दिया है तो चश्माशाही के निर्मल जल को संरक्षणीय बताकर प्रकृति-चित्रण का हृदयग्राही वर्णन किया है | इस तरह देखता हूँ कि नागार्जुन के कविताओं में प्रकृति का ममस्पर्शी चित्रण विविध रूप में हुआ है |

संदर्भ

1. नागार्जुन रचनावली: 3, सं-शोभाकांत पृष्ट -24
2. वही
3. वही पृष्ट -25
4. वही
5. वही
6. वही
7. वही
8. वही पृष्ट -26
9. नागार्जुन; प्रतिनिधि कविताएँ; राजकमल पेपर बैक, नई दिल्ली पृष्ट -7
10. नागार्जुन रचनावली: 3; संपादक-शोभाकांत, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली प्र० व० -2011 पृष्ट -26
11. वही पृष्ट -114
12. वही
13. वही पृष्ट - 140